प्रभात की कविताएं

बच्चे और हम

वही अन्न-जल हमें भी मिलता है
जो हमारे बच्चों को
फिर भी हमें लगा ही रहता है सूखना
बच्चे बनिस्पत हमारे स्वस्थ दिखते हैं
तन से भी मन से भी

इसकी एक तो वजह है उनकी चढ़ती उम्र
और दूसरी हम रह रहे हैं उसी दुनिया में
उनकी बेफिक्री

हम रह रहे हैं वह दुनिया
उनके लिए भी उतनी ही क्रूर है
जितनी हमारे लिए
मगर वे रहते हैं बेफिक्र
सोचता हूं कि हम क्यों नहीं रह पाते
उतने बेफिक्र
हम अगर उनसे समझदार हैं
तो हमें उनसे ज्यादा बेफिक्र होना चाहिए
पर ऐसा होता तो नहीं है
शायद हमारी फिक्रें इतनी उलझी हैं
हम इस कदर भार हैं
जैसे बंजड ढूह
बच्चे इस कदर निर्भार
जैसे खिले फूल ◆

श्रम

जिन्दा रहने के लिए
अपना श्रम दूसरों के हित में बेचने के बाद
हम में से कुछ अतिरिक्त श्रम करते हैं
रोज-रोज का थोड़ा-थोड़ा श्रम
बचाता है रोज-रोज थोड़ा-थोड़ा मरने से

अतिरिक्त श्रम
पुनर्जीवित करता है

यूं ही नहीं मिलता पुनर्जीवन
यूं ही नहीं हो जाता
श्रम कर चुकने के बाद फिर श्रम

जो करता है यह श्रम
दिखाता है उस श्रमिक को
कि इस चौतरफा अंधेरे में
यही एक रास्ता है
जिस पर चलकर
यह जीवन पार किया जा सकता है
वरना इस बगटूट भागमभाग में
पग धरने को भी जगह कहां है ◆

31बी, पुरुषार्थ नगर बी,
जगतपुरा, जयपुर -302025